Government must assure the country about steps to halt further depreciation of the rupee. It is necessary to take measures without pressing the panic button to ensure that the industrial recovery is not hampered. The Government must also realise that inept handling of domestic political situation may shake the confidence of the overseas investors, which should not be allowed to happen.

SHRI RAJIV SHUKLA (Uttar Pradesh): Madam, I associate myself with the issue raised by Shri Pranab Mukherjee in regard to depreciation of the rupee.

SHRI J. CHITHARANJAN (Kerala): Madam, I also associate myself with the views expressed by Mr. Pranab Mukherjee. The fall in the price of the Indian rupee is continuing for several weeks. It has already reached alarming proportions. This has got very serious repercussions in our economy. Therefore, drastic measures will have to be taken to prevent that. But, unfortunately it seems that the Reserve Bank of India, the Finance Ministry and the Government of India are not taking sufficient measures to prevent this development. Through you, I request the Government of India to take effective measures.

SHRI T.N. CHATURVEDI (Uttar Pradesh): Madam, Shri Pranab Mukherjee has raised a very important issue. I associate myself with the sentiments expressed by him as regards the depreciation in the value of the rupee and also as regards the impact that it may have on our balance of payments problem.

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल) : उपसभापति महोदया, मैं अपने आपको इस विशेष उल्लेख से सम्बद्ध करती हूं।

Construction of a National Memorial at the birth place of Munshi Prem Chand

श्रीमती सरला माहेश्वरी (पश्चिमी बंगाल) : माननीय उपसभापति महोदया, महान उपन्यास सम्राट तथा साम्राज्यवाद, सामंतवाद और महाजनी पूंजीवाद के खिलाफ भारत की जनता की मुक्ति की लड़ाई लड़ने वाले करोड़ों लोगों के हृदय सम्राट मुंशी प्रेमचन्द भारत की जनता के भी हृदय सम्राट हैं। इसी 31 जुलाई को उनका 121वां जन्मदिन था। प्रेमचन्द का साहित्य, उनके विचार हमारी अमूल्य धरोहर हैं। आज के इस समय में जब दिन-प्रतिदिन मानवीय मूल्यों का क्षरण हो रहा है, इतिहास के अंत की घोषणा की जा रही है, पूंजीवाद को मानवीय समाज का अंतिम पड़ाव घोषित किया जा रहा है तथा जनता के मुक्ति-संघर्षों के प्रति घनघोर अनास्था व्यक्त की जा रही है, ऐसे समय में प्रेमचन्द साहित्य प्रकाश-पुंज के समान है। प्रेमचन्द की विरासत को हर स्तर पर सुरक्षित रखना हमारा पुनीत कर्तव्य है। बनारस के पास के जिस लमही गांव में प्रेमचन्द का जन्म हुआ और जहां उन्होंने अपने सम्पूर्ण अमर साहित्य की रचना की, उस लमही गांव में प्रेमचन्द

की स्मृति में एक मामूली सा स्मारक बना हुआ है जिसकी सही ढंग से देखभाल भी नहीं होती है जिसकी तुलना में हम सारी दुनिया में टॉलस्टाय, गोर्की, लुशून और खुद हमारे ही देश के रबीन्द्र नाथ के विशाल संस्थागत स्मारकों को अच्छी तरह से पहचान पा रहे हैं। इन तमाम लेखकों के नाम से बनी संस्थाएं, संस्कृति कर्मियों की तमाम पीढ़ियों को संरक्षण और पोषण देने का काम कर रही हैं। इस मामले में प्रेमचन्द की उपेक्षा का कोई कारण मेरी समझ में नहीं आता है। उपसभापति महोदया, मुन्शी प्रेमचन्द पर समूची हिन्दू जाति को गर्व है। मेरी केन्द्रीय सरकार से यह मांग है कि लमही गांव में प्रेमचन्द जी के स्मारक को एक भव्य रूप तो दिया ही जाए, इसके साथ ही लमही और बनारस में कुछ ऐसे बृहद संस्थानों की स्थापना की जाए जो साहित्य और संस्कृति के प्रश्नों पर गहन शोध और सृजनात्मक कार्यों के रूप में अपनी खास पहचान बना सके। तभी शायद हम प्रेमचन्द के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर पाएंगे। क्योंकि प्रेमचन्द ने जो हमें दिया, आज भी शायद उन्हें इन्तजार है-

"जो मजार यहां है मेरे मजार सा है,
कोई तो जिम्मा ले, कोई तो सूद चुकाए,
वो इन्कलाब जो आज भी उधार सा है।"

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल (उत्तर प्रदेश): मैड़म, मैं अपने आपको इनसे सम्बद्ध करता हूं।

उपसभापति : सब कर रहे हैं। श्रीमती चन्द्रकला पांडेय।

श्रीमती चन्द्रकला पांडेय (पश्चिमी बंगाल) : मैडम, मुन्शी प्रेमचन्द को पढ़ाने का मुझे सौभाग्य मिल रहा है। मैं एसोसिएट करने के साथ-साथ दो शब्द बोलना चाहूंगी।

उपसभापति : दो शब्द? जरा कम बोलिए क्योंकि मेरे पास अभी 9 लोगों के नाम हैं और इनमें श्री संजय का भी नाम है।

श्रीमती चन्द्रकला पांडेय : मैडम, मैं केन्द्रीय सरकार से कहना चाहूंगी कि यहां जो मुद्दा उठाया गया है उसपर ध्यान दे और विश्व स्तर पर अपनी पहचान बनाने वाले इस लेखक के लिए बंगाल में बहुत काम हो रहा है। हम चाहेंगे कि केन्द्रीय सरकार हमारी मांगों को माने और लम्ही गांव में उनका एक अन्तरराष्ट्रीय महत्व का स्मारक स्थापित करे।

श्री अर्जुन सिंह (मध्य प्रदेश): उपसभापति महोदया, मुन्शी प्रेमचन्द ने सही मायने में भारत के चित्र को दुनिया में प्रस्तुत किया है। उनका "गोदान" एक तरह से हमारे देश के उन पहलुओं को उजागर करता है जिनकी ओर हमारी निगाहें नहीं जाती क्योंकि हम ग्रामीण अंचल के दैनिक जीवन से जुड़े हुए नहीं हैं। मैं माननीया माहेश्वरी जी के इस मैंशन के साथ अपने आपको सम्बद्ध करता हूं। मैं समझता हू कि यह हमारे देश के गौरव को बढ़ाने वाली बात होगी यदि हम यहां पर एक ऐसा स्मारक बनाएं जो न केवल ईंट पत्थरों का स्मारक रह जाए बल्कि एक ऐसा इन्स्टीट्यूट बनना चाहिए जो आधुनिक युग में ग्रामीण अंचल की परिस्थितियों से जूझने में हमें कुछ प्रकाश भी दे।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : मैडम, एक स्पष्ट आदेश सेरूल निकला कि स्पेशल मैंशन केवल पढ़ा जाएगा और उसको सम्बद्ध करने वाले केवल ऐसोसिएट करेंगे। यदि उस रूल का

अभी से रिलेक्सेशन हो गया तो फिर वही परिस्थिति आ जाएगी जो पहले हुआ करती थी। मेरा आपसे निवेदन है कि कृपा करके रूल को एन्फोर्स कराएं तो बेहत्तर होगा।

श्रीमती कुमकुम राय (बिहार) : मैडम, ...

उपसभापति : आप बैठिए। आपसे नहीं कहा है। मेरे और उनके बीच में किसी एमपी को आने की कोई आवश्यकता नहीं है। I can communicate with him very easily.

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : रूल होते हुए वायलेट हो तो अच्छा नहीं लगता।

उपसभापति : हम आपको रूल बताते हैं, कभी-कभी आप भी हमें रूल बताते हैं तो हमें बड़ी खुशी होती है। सवाल यह है किं इस हाउस में सालभर से आप मेम्बर हैं। पिछले दो साल से यहां इस तरह के विषय कभी उठे नहीं हैं, ऐसे विचार उठते हैं जिनसे विवाद होता है। यह ऐसा मसला है मुन्शी प्रेमचन्द का जिनसे मैं खुद सहमत हूं। मैंने बचपन से उनकी कहानियां पढ़ी हैं, चाहे "गिल्ली डंडा " हो, चाहे "गोदान" हो। अगर कभी-कभी ऐसे सवाल उठते हैं और उसके लिए चेयर पर बैठकर रूल को थोड़ा एक्सटेंड कर दें तो हम लोगों को तकलीफ नहीं होनी चाहिए। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि हर मसले पर रूल को वायलेट किया जाए। हम रूल पर दृढ़ता के साथ कायम रहेंगे। पूरा हाउस खाली अपने विचारों से सम्बद्ध हो रहा है, जिसमें आप भी शामिल हैं।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : मैडम, मैं एक निवेदन करूं कि मैं स्पेशल मैंशन लाया था माल्टा बोट ट्रेज्डी के संबंध में जिसमें हमारे देश के 170 सपूत डुबाकर मार दिए गए थे।

उपसभापति : अभी वह विषय ...**(व्यवधान)**...

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : उस पर मुझे केवल पढ़ने दिया गया। अभी मैं उसे एसोसिएट भी नहीं कर पाया था कि दूसरा नाम आ गया।

उपसभापति : अभी इस बारे में मेरा कुछ कहना मुनासिब नहीं है।

श्री भारतेन्दु प्रकाश सिंहल : मेरा यह कहना है कि उस समय यह रूल बहुत कड़ाई से इनफोर्स हुआ था।

उपसभापति : मैंने आपकी बात को ध्यान में रखा है।

श्री एस.एस. अहलुवालिया (बिहार) : महोदया, मैं आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा, कृपया मेरी एक बात सुन लें। आपने कहा उनके और आपके बीच एम.पी. नहीं आना चाहिए तो यह डिफरेंसिएशन कैसे हो गया? वे भी एम. पी. हैं और हम भी एम.पी. हैं।

उपसभापति : दूसरा कोई नहीं आना चाहिए। मेरे और आपके बीच में वैसे तो लोग बहुत बैठे हैं परंतु विचारों के बीच कोई नहीं आ सकता। जरा जल्दी कीजिए क्योंकि I have got a lot of things to do.

श्री बालकवि बैरागी (मध्य प्रदेश) : उपसभापति महोदया, सरला जी ने यहां जो बात कही और जो भावना व्यक्त की मैं अपने आपको उससे संबद्ध करता हूं। इस देश में जब तक शोषण और गरीबी के खिलाफ संघर्ष चलता रहेगा तब तक मुंशी प्रेमचंद साहित्य के इस पक्ष से

हमेशा प्रासंगिक रहेंगे। मैं सरला जी से अपने आपको जोड़कर एक कदम और आगे बढ़कर यह कहना चाहता हूं कि हमें देश में दूसरी प्रांतीय सरकारों को भी इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए ताकि लमही के लिए वे भी अपने बजट से कुछ पैसा निकालें जिससे कि हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना सिर ऊंचा करने लायक कोई स्मारक बना सकें। पुरातत्व विभाग को भी इसमें आगे आना चाहिए। उत्तर प्रदेश सरकार को तो सबसे गतिशील होकर इस काम को अपने हाथ में लेना चाहिए। मैं अपने आपको इससे संबद्ध करते हुए गौरवान्वित महसूस करता हूं।

उपसभापति : श्री संजय निरुपम।

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र) : उपसभापति महोदया, मैं अपने विषय को शुरू करने से पहले सरला माहेश्वरी जी ने जो विषय रखा है उससे अपने आपको संबद्ध करता हूं और सदन को याद दिलाना चाहता हूं कि तीन वर्ष पहले मैंने इसी विषय पर भाषण दिया था। तीन वर्ष से मेरा निवेदन सरकार के मंत्रालयों की फाइलों में गुप्त पड़ा है। यदि हो सके तो इस पर रिएक्ट करने का विचार करें।

उपसभापति महोदया, मेरा विषय है महाराष्ट्र सरकार ...**(व्यवधान)**...

DR. L.M. SINGHVI (Rajasthan): Madam, we want to associate ourselves before another special mention is made. I hope you will permit us. श्रीमती सरला माहेश्वरी जी ने जो प्रश्न उठाया उससे सारा सदन अपने आपको संबद्ध करता है और राष्ट्रीय सरकार से यह मांग करता है कि वह एक व्यापक नीति बनाए जिससे कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रतिनिधि व्याख्या का संरक्षण पूरी तरह से उनकी स्मृति में सौंपा जाए। यह बहुत आवश्यक है। यह दूसरे देशों में होता है परंतु जब हमारे देश में नहीं होता तो रोना आता है। टैगोर हिल्स की चर्चा मैंने की है, जहां टैगोर रहे, उन्होंने "गीतांजलि" लिखी परंतु आज वहां माफिया के लोग हैं और उस पर अधिकार कर रहे हैं परंतु सरकार कोई कदम नहीं उठा पा रही है। मैं प्रेमचंद जी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए सदन के सब लोगों के साथ अपने आपको संबद्ध करता हूं।

THE DEPUTY CHAIRMAN: Yes. मंत्री जी यहां हैं। हाउस की और चेयर की भावनाओं से आप संबद्ध हैं।

श्री संजय निरुपम : महोदया, रेड्डी साहब ज्ञानपीठ विजेता।

उपसभापति : अब आप बोल दीजिए।

डा. सी. नारायण रेड्डी (नाम-निर्देशित) : उपसभापति महोदया, मैं भाषण नहीं देता। सरला जी के विचार, जो प्रेमचंद जी के स्मारक के बारे में हैं उसके लिए मैं सदन को समर्थन देता हूं और स्वयं को संबद्ध करता हूं।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI O. RAJAGOPAL): Madam, I would like to make one submission on this. I would convey the sense of the House regarding the point raised by Smt. Sarla Maheshwari to the Minister concerned.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Very good. Very sporting Minister!

श्रीमती सविता शारदा (गुजरात): सरला माहेश्वरी जी ने महान् साहित्यकार के विषय में जो कुछ कहा मैं अपने आपको उससे संबद्ध करना चाहती हूं।

उपसभापति : अब तो संजय जी को इजाजत दे दीजिए। वे कितनी सहनशीलता का प्रदर्शन कर रहे हैं, चुपचाप बैठे हैं, गुस्सा नहीं कर रहे हैं, कितने अच्छे हो गए हैं इसलिए उन्हें मुबारकबाद दे दीजिए।

श्री संजय निरुपम : महोदया, क्योंकि विषय इस देश के बहुत बड़े साहित्यकार से जुड़ा हुआ है तथा मैंने भी प्रेमचंद को बहुत पढ़ा है और मेरे मन में उनके प्रति बहुत सम्मान है इसलिए मैं चुपचाप बैठा हूं।

उपसभापति : ये भी लेखक हैं, संपादक हैं, बोलिए।

Threat to the Federal Structure of the country by the Maharashtra Government

श्री संजय निरुपम (महाराष्ट्र) : उपसभापति महोदया, महाराष्ट्र सरकार ने पिछले दिनों भारत के संघीय ढांचे को चोट पहुंचाने का एक अक्षम्य अपराध किया। मुंबई में शिवसेना प्रमुख की गिरफ्तारी की किसी भी संभावित प्रतिक्रिया से निपटने के लिए महाराष्ट्र सरकार ने बेशुमार सुरक्षा बल तैनात किए। उसके बाद महाराष्ट्र के दो गृह राज्य मंत्रियों ने केंद्रीय गृह मंत्री से अतिरिक्त सुरक्षा बल मांगी। केंद्रीय गृह मंत्री ने मना कर दिया और कहा कि महाराष्ट्र सरकार को अभी इसकी आवश्यकता नहीं है। इसकी प्रतिक्रिया में महाराष्ट्र के गृह मंत्री ने यह घोषणा की कि अगर केंद्र हमें अतिरिक्त सुरक्षा बल नहीं देगा तो हम मुंबई में केंद्र सरकार के जितने भी संस्थान हैं उन संस्थानों की सुरक्षा के लिए तैनात राज्य सरकार के पुलिस बलों को हटा लेंगे। यह भारत के संघीय ढांचे को चुनौती देने वाला वक्तव्य है - महाराष्ट्र के गृह मंत्री ने न सिर्फ यह वक्तव्य दिया बल्कि मुंबई के एअर पोर्ट की सुरक्षा के लिए तैनात राज्य सरकार की पुलिस को वापस ले लिया। मुंबई में केंद्र सरकार के कई संवेदनशील संस्थान हैं। मसलन, आणिवक ऊर्जा केंद्र। ऐसे संस्थानों की सुरक्षा राष्ट्रीय महत्व का विषय है। इसकी जिम्मेदारी केंद्र के साथ साथ राज्य सरकार की भी है। अगर राष्ट्रीय महत्व के संवेदनशील संस्थानों की सुरक्षा देने की जिम्मेदारी से राज्य सरकारें पीछे हटने लगीं तो केंद्र के पास क्या विकल्प रहेगा? ऐसी स्थिति में भारत का संघीय ढांचा कितना सुरक्षित रहेगा? क्या मुंबई के एअरपोर्ट से राज्य सरकार द्वारा राज्य की पुलिस हटाने का निर्णय केंद्र के ध्यान में आया है? क्या इस अपराध के लिए केंद्र ने महाराष्ट्र सरकार के खिलाफ कोई कार्रवाई की है? क्या यह सच है कि 25 जुलाई, 2000 को शिव सेना प्रमुख की गिरफ्तारी के समय मुंबई पुलिस के निर्देश पर एमटीएनएल ने लगभग तीन घंटे तक सारे फोन बंद कर दिए थे? क्या केंद्र सरकार के अधिकारियों पर किसी राज्य की पुलिस को अपना हुक्म चलाने का अधिकार है? क्या केंद्र सरकार इस पूरे मामले की जांच कराना चाहेगी? धन्यवाद।

श्री सुरेश पचौरी (मध्य प्रदेश): साथ में जो हाई कोर्ट का आब्जर्वेशन है उसको जांच की परिधि में ले आइए। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय निरुपम : वकील साहब आकर ---

उपसभापति : इसकी मैंने इजाजत नहीं दी है।